Toppersnotes®
Unleash the topper in you

# KVS

## Principal & Vice Principal

Kendriya Vidyalaya Sangathan (KVS)

भाग - 2

SIERRA INNOVATIONS

# INDEX


| S.N. | Content | P.N. |
|---|---|---|
| | **इकाई – II**<br>**समझना, सिखाना, सीखना** | |
| 1. | शिक्षण-अधिगम की मूलभूत अवधारणाएँ | 1 |
| 2. | एक प्रणाली के रूप में शिक्षण-अधिगम | 4 |
| 3. | व्यवहारवाद - मूल अवधारणाएँ | 10 |
| 4. | व्यवहारवाद - स्कूल लीडरशिप के लिए निहितार्थ (प्रिंसिपल, वाइस-प्रिंसिपल, HM) | 15 |
| 5. | व्यवहारवाद - शिक्षकों और सीखने वालों के लिए निहितार्थ | 20 |
| 6. | संज्ञानात्मकता - मुख्य अवधारणाएँ | 26 |
| 7. | कॉग्निटिविज्म - प्रिंसिपल, वाइस-प्रिंसिपल और हेडमास्टर के लिए निहितार्थ | 31 |
| 8. | कॉग्निटिविज़्म - टीचर्स और लर्नर्स के लिए निहितार्थ | 36 |
| 9. | रचनावाद - मूल अवधारणाएँ | 40 |
| 10. | कंस्ट्रक्टिविज़्म - प्रिंसिपल्स के लिए मतलब (गहराई से, प्रैक्टिकल, परीक्षा के लिए तैयार) | 46 |
| 11. | कंस्ट्रक्टिविज्म - टीचर्स और लर्नर्स के लिए निहितार्थ | 50 |
| 12. | तुलनात्मक विश्लेषण - व्यवहारवाद, संज्ञानवाद और रचनावाद | 56 |
| 13. | प्रिंसिपल के लिए एडमिनिस्ट्रेटिव असर - इंस्ट्रक्शनल लीडरशिप, एकेडमिक प्लानिंग, मेंटरिंग और मॉनिटरिंग | 59 |
| 14. | वाइस-प्रिंसिपल और हेडमास्टर (HM) के लिए एडमिनिस्ट्रेटिव इम्प्लीकेशन | 66 |
| 15. | आधुनिक शिक्षण प्रतिमानों में शिक्षकों की भूमिका | 70 |
| 16. | आधुनिक शिक्षण प्रतिमानों में शिक्षार्थियों की भूमिका | 77 |
| 17. | शिक्षक-छात्र संबंध की प्रकृति | 85 |
| 18. | नवीन शैक्षणिक पद्धतियाँ | 93 |
| 19. | उत्पादक कक्षा वातावरण | 101 |
| 20. | अनुशासन, शक्ति और की समझ<br>कक्षा प्राधिकरण गतिशीलता | 109 |
| 21. | अनुशासन और शक्ति - वैचारिक नींव, आधुनिक दृष्टिकोण और नेतृत्व के निहितार्थ | 117 |
| 22. | क्लासरूम मैनेजमेंट - मॉडल, सिस्टम, स्ट्रैटेजी और लीडरशिप फ्रेमवर्क | 123 |
| 23. | प्रधानाचार्य का शैक्षणिक नेतृत्व | 131 |
| 24. | सीखने के सिद्धांतों से जुड़ा मूल्यांकन | 138 |

| | | |
|---|---|---|
| 25. | केवीएस प्रिंसिपल / वाइस-प्रिंसिपल / एचएम के लिए केस स्टडी, परिदृश्य और पीवाईक्यू-उन्मुख आवेदन | 142 |
| 26. | अंतिम एकीकृत नोट्स | 149 |
| 27. | शिक्षा में दृष्टिकोण<br>शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में स्कूल की भूमिका | 156 |
| 28. | समाजीकरण और परिवर्तन की एजेंसी के रूप में स्कूल | 159 |
| 29. | भारत की शिक्षा नीतियाँ: ऐतिहासिक विकास | 162 |
| 30. | राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020: गहन व्यापक अवलोकन | 165 |
| 31. | एनईपी 2020: स्कूल शिक्षा ढांचे की गहराई | 169 |
| 32. | राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा: आधारभूत चरण (एनसीएफ-एफएस 2022) | 172 |
| 33. | एनसीएफ-एफएस 2022: कार्यान्वयन, सामग्री और शिक्षण शास्त्र | 175 |
| 34. | स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (NCF-SE 2023): संरचना, दर्शन और रूपरेखा का अवलोकन | 179 |
| 35. | NCF-SE 2023: करिकुलम एरिया और लर्निंग आउटकम (डीप डाइव) | 183 |
| 36. | NCF-SE 2023: पेडागॉजी (गहन, विस्तृत, उच्च-स्तरीय नोट्स) | 190 |
| 37. | एनसीएफ-एसई 2023: मूल्यांकन और परीक्षाएं | 195 |
| 38. | निपुण भारत मिशन: विजन, संरचना और घटक | 200 |
| 39. | निपुण भारत: शिक्षण और मूल्यांकन | 207 |
| 40. | बाल अधिकार: मार्गदर्शक सिद्धांत (गहन, व्यापक नोट्स) | 211 |
| 41. | सुरक्षित स्कूल वातावरण | 216 |
| 42. | बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार अधिनियम (आरटीई 2009) | 222 |
| 43. | राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों का ऐतिहासिक अध्ययन | 228 |
| 44. | स्कूल पाठ्यक्रम सिद्धांत | 234 |
| 45. | स्कूली शिक्षा के चरण: शिक्षण और मूल्यांकन | 240 |
| 46. | अंतिम एकीकृत नोट्स (मास्टर संश्लेषण) | 247 |

# II UNIT

# समझना, सिखाना, सीखना

## शिक्षण-अधिगम की मूलभूत अवधारणाएँ

**1. टीचिंग, लर्निंग और इंस्ट्रक्शन का मतलब**

हर स्कूल सिस्टम का सेंट्रल एकेडमिक कोर टीचिंग और लर्निंग है। एक स्कूल लीडर - प्रिंसिपल, वाइस-प्रिंसिपल और HM - के लिए ये प्रोसेस फैसले लेने, सुपरविज़न, पॉलिसी बनाने और एकेडमिक एडमिनिस्ट्रेशन का बेसिक बेस बनाते हैं। टीचिंग का कॉन्सेप्ट क्लासिकल "नॉलेज ट्रांसमिशन" अप्रोच से मॉडर्न "लर्निंग फैसिलिटेशन" पैराडाइम में काफी बदल गया है।

**टीचिंग** का मतलब है एक प्रोफेशनल (टीचर) द्वारा सिस्टमैटिक, जानबूझकर और प्लान किए गए कामों का सेट, जो सीखने वालों को समझने, स्किल हासिल करने, सोच बदलने या व्यवहार में बदलाव लाने के लिए गाइड करता है। इसमें कम्युनिकेशन, डेमोंस्ट्रेशन, एक्सप्लेनेशन, सवाल पूछना, फीडबैक और सीखने वाले के रिस्पॉन्स के आधार पर लगातार एडजस्टमेंट शामिल है।

**सीखना** अनुभव, बातचीत, सोच-विचार और प्रैक्टिस के ज़रिए ज्ञान, स्किल्स, नज़रिए या मूल्यों को पाने, बदलने या फिर से व्यवस्थित करने का प्रोसेस है। सीखना अंदरूनी, डायनैमिक और लगातार होता है; यह देखने लायक (बिहेवियरल परफॉर्मेंस) या न देखने लायक (मेंटल रीस्ट्रक्चरिंग, कॉन्सेप्चुअल चेंज) हो सकता है।

**इंस्ट्रक्शन** का मतलब है स्ट्रक्चर्ड, ऑर्गनाइज़्ड, सीक्वेंस्ड टीचिंग-लर्निंग इंटरैक्शन, जिसे तय मकसद को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसमें लेसन प्लानिंग, पढ़ाने के तरीके, रिसोर्स चुनना, असेसमेंट के तरीके और अलग-अलग तरह के सीखने वालों के लिए स्ट्रेटेजी शामिल हैं।

मॉडर्न एजुकेशनल लीडरशिप में, टीचिंग-लर्निंग सिर्फ़ क्लासरूम की एक्टिविटी नहीं है; यह स्कूल में सुधार का दिल है। प्रिंसिपल सिर्फ़ बिल्डिंग्स को मैनेज नहीं करते, बल्कि लर्निंग को लीड करते हैं; इसलिए, इंस्ट्रक्शनल लीडरशिप KVS और दुनिया भर के दूसरे स्कूल सिस्टम में एक मेन मॉडल बन गया है।

**2. स्कूलों में पढ़ाने-सीखने का गतिशील स्वभाव**

पढ़ाना और सीखना **इंटरैक्टिव, रिलेशनल और कॉन्टेक्स्ट-ड्रिवन** प्रोसेस हैं। चार फैक्टर उनकी क्वालिटी तय करते हैं:

1. **टीचर की काबिलियत** (पढ़ाने के कंटेंट की जानकारी, सब्जेक्ट में महारत, क्लासरूम मैनेजमेंट)।
2. **सीखने वाले की खासियतें** (पहले की जानकारी, मोटिवेशन, सोशियो-कल्चरल बैकग्राउंड, सीखने का तरीका)।
3. **सीखने का माहौल** (फिजिकल लेआउट, साइकोलॉजिकल माहौल, स्कूल पॉलिसी)।
4. **करिकुलर और इंस्टीट्यूशनल फ्रेमवर्क** (सिलेबस, लर्निंग आउटकम, NEP 2020 प्रिंसिपल्स)।

मॉडर्न नज़रिए से स्कूल में पढ़ाई को इस तरह समझा जाता है:

- **स्टूडेंट-सेंटर्ड:** एंगेजमेंट, ऑटोनॉमी, कोलेबोरेशन पर फोकस करना।
- **काबिलियत पर आधारित:** फैक्ट्स याद करने के बजाय काबिलियत बढ़ाना।
- **समावेशी:** CWSN सहित अलग-अलग तरह के सीखने वालों को शामिल करना।
- **टेक्नोलॉजी-इंटीग्रेटेड:** रिप्रेजेंटेशन, सिमुलेशन और पर्सनलाइज़ेशन के लिए एक इंस्ट्रूमेंट के तौर पर ICT।
- **अनुभव और पूछताछ पर आधारित:** खोज, समस्या-समाधान और असली कामों के ज़रिए सीखना।

टीचर-डायरेक्टेड टीचिंग से लर्नर-डायरेक्टेड लर्निंग में इस बदलाव ने स्कूल लीडर्स की भूमिकाओं को बदल दिया है।

**3. टीचिंग-लर्निंग पैराडाइम्स का विकास**

ऐतिहासिक रूप से, स्कूलिंग के तरीके अलग-अलग तरीकों से विकसित हुए हैं:

**A. शिक्षक-केंद्रित प्रतिमान**

- बिहेवियरिस्ट फिलॉसफी पर आधारित।
- टीचर फ़ैसले लेने में हावी रहता है; सीखने वाले निर्देशों का पालन करते हैं।
- असेसमेंट में याद करने, सही होने, दोहराने पर ध्यान दिया जाता है।
- अथॉरिटी सेंट्रलाइज़्ड है।

**B. शिक्षार्थी-केंद्रित प्रतिमान**

- कॉग्निटिविज़्म और ह्यूमैनिस्टिक साइकोलॉजी से प्रेरित।
- सीखने वालों की ज़रूरतों, मोटिवेशन, मेंटल प्रोसेस पर ज़ोर।
- ज़्यादा बातचीत, सवाल-जवाब, चर्चा।
- असेसमेंट में एप्लीकेशन और समझ शामिल है।

**C. अधिगम-केंद्रित प्रतिमान**

- कंस्ट्रक्टिविज़्म और सोशियो-कल्चरल थ्योरीज़ पर बना है।
- सीखने वाले मिलकर मतलब बनाते हैं।
- टीचर सीखने के अनुभवों के फ़ैसिलिटेटर और डिज़ाइनर बन जाते हैं।
- लीडरशिप ऑटोनॉमी, इनोवेशन, रिफ्लेक्टिव प्रैक्टिस को सपोर्ट करती है।

**इंस्ट्रक्शनल लीडरशिप** में बदलाव इस बुनियादी बदलाव को दिखाता है।

**4. एक शिक्षण संगठन के रूप में स्कूल**

एक मॉडर्न स्कूल एक ऐसा इकोसिस्टम है जहाँ सभी एक्टर्स - लीडर्स, टीचर्स, स्टूडेंट्स, पेरेंट्स - लगातार सीखते रहते हैं। स्कूल सेटिंग में एक लर्निंग ऑर्गनाइज़ेशन की खास बातें ये हैं:

- **साझा विज़न:** सभी स्टेकहोल्डर्स एजुकेशनल मिशन को समझते हैं और उसके लिए कमिटेड हैं।
- **मिलकर काम करने वाला कल्चर:** टीचर मिलकर प्लान बनाते हैं, पढ़ाते हैं, सोचते हैं और सुधार करते हैं।
- **बांटी हुई लीडरशिप:** प्रिंसिपल, VP, HM, सीनियर टीचर और कोऑर्डिनेटर के बीच पढ़ाने की ज़िम्मेदारियां बांटी जाती हैं।
- **सोच-विचार और लगातार सुधार:** डेटा-बेस्ड फ़ैसले लेना, खुद का मूल्यांकन, साथियों का अवलोकन।
- **एडैप्टेबिलिटी:** पॉलिसी में बदलाव, समाज की ज़रूरतों, टेक्नोलॉजी में तरक्की के हिसाब से ढलना।
- **नॉलेज शेयरिंग:** वर्कशॉप, PLCs (प्रोफेशनल लर्निंग कम्युनिटीज़), पेडागॉजी पर फोकस करने वाली स्टाफ मीटिंग्स।

प्रिंसिपल "चीफ लर्निंग ऑफिसर" बन जाता है, और ऐसा माहौल बनाता है जहाँ टीचिंग-लर्निंग की बेहतरीन क्वालिटी बढ़ सके।

**5. प्रिंसिपल की इंस्ट्रक्शनल लीडरशिप में टीचिंग-लर्निंग क्यों सेंट्रल है**

KVS में, प्रिंसिपल की सबसे बड़ी ज़िम्मेदारी स्टूडेंट्स की एकेडमिक अचीवमेंट और होलिस्टिक डेवलपमेंट है। टीचिंग-लर्निंग से जुड़े उनके मुख्य इंस्ट्रक्शनल लीडरशिप कामों में शामिल हैं:

1. करिकुलम और नेशनल फ्रेमवर्क के हिसाब से **सीखने के लक्ष्य और मकसद तय करना ।**
2. सुपरविज़न, ऑब्ज़र्वेशन और मेंटरिंग के ज़रिए **टीचिंग क्वालिटी पक्का करना ।**
3. CPD प्रोग्राम, ICT ट्रेनिंग, मिलकर प्लानिंग के ज़रिए **टीचरों को प्रोफेशनली डेवलप करना ।**
4. डेटा एनालिसिस, असेसमेंट, रिमेडियल प्रोग्राम का इस्तेमाल करके **स्टूडेंट की प्रोग्रेस को मॉनिटर करना ।**
5. **सीखने का अच्छा माहौल बनाना** - सुरक्षित, सबको साथ लेकर चलने वाला, इमोशनली सपोर्टिव।
6. एक्सपीरिएंशियल लर्निंग, कॉम्पिटेंसी-बेस्ड एजुकेशन, आर्ट-इंटीग्रेशन जैसे **इनोवेशन को लागू करना ।**
7. स्कूल के बाद भी सीखने को मज़बूत करने के लिए **माता-पिता को शामिल करना आसान बनाना ।**
8. ज़रूरतमंद स्टूडेंट्स और CWSN को सपोर्ट करके **बराबरी पक्का करना ।**

इंस्ट्रक्शनल लीडरशिप, टीचिंग-लर्निंग को सभी एडमिनिस्ट्रेटिव कामों के केंद्र में रखती है।

**6. असरदार टीचिंग के मुख्य निर्धारक**

टीचरों को कई तरह की काबिलियत दिखानी होगी, जिसमें शामिल हैं:

- **सब्जेक्ट में महारत:** सही, अपडेटेड जानकारी।
- **पेडागॉजिकल नॉलेज:** लर्निंग थ्योरीज़ के साथ अलाइन्ड स्ट्रेटेजी।
- **असेसमेंट लिटरेसी:** टेस्ट, रूब्रिक्स, पोर्टफोलियो डिजाइन करना।
- **क्लासरूम मैनेजमेंट:** रूटीन, बदलाव और ऑर्डर बनाना।
- **ICT में महारत:** सिर्फ़ कंटेंट दिखाने के लिए नहीं, बल्कि सीखने को बेहतर बनाने के लिए टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल करना।
- **कल्चरल सेंसिटिविटी:** सीखने वालों की अलग-अलग तरह की चीज़ों को समझना और अलग-अलग चीज़ों को समझना।

स्कूल लीडर्स के लिए, टीचर की क्वालिटी से कोई समझौता नहीं किया जा सकता। टीचिंग को देखना, कंस्ट्रक्टिव फीडबैक देना और रिफ्लेक्टिव प्रैक्टिस को सपोर्ट करना ज़रूरी ज़िम्मेदारियाँ हैं।

**7. असरदार लर्निंग के मुख्य निर्धारक**

सीखने की क्षमता में सुधार तब होता है जब छात्र:

- मतलब एक्टिवली निकालें, पैसिवली नहीं।
- नई जानकारी को पहले की जानकारी से जोड़ें।
- इमोशनली और इंटेलेक्चुअली जुड़ें।
- समय पर, एक्शन लेने लायक फ़ीडबैक पाएं।
- साथियों के साथ मिलकर काम करें।
- आज़ादी और पसंद का अनुभव करें।
- कॉन्सेप्ट को असल हालात में लागू करें।
- सुरक्षित और अहमियत महसूस करें।

टीचिंग-लर्निंग सबसे असरदार तब बनती है जब साइकोलॉजिकल सेफ्टी, कॉग्निटिव चैलेंज और सोशल कोलेबोरेशन एक-दूसरे से मिलते हैं।

**8. एक इंटरेक्शनल प्रोसेस के तौर पर टीचिंग-लर्निंग**

टीचिंग-लर्निंग असल में इनके बीच एक इंटरैक्शन है:

1. **टीचर-लर्नर:** डायलॉग वाला रिश्ता, कम्युनिकेशन, मोल-भाव।
2. **लर्नर-कंटेंट:** एंगेजमेंट, एक्सप्लोरेशन, इंटरप्रिटेशन।
3. **टीचर-कंटेंट:** ज्ञान का पेडागॉजिकल रिप्रेजेंटेशन और ट्रांसफॉर्मेशन।
4. **लर्नर-लर्नर:** साथ मिलकर सीखना, ग्रुप में काम, मिलकर काम करने वाले प्रोजेक्ट।
5. **स्कूल-कम्युनिटी:** वैल्यूज़, कल्चर, उम्मीदें, रिसोर्सेज़।

प्रिंसिपल यह पक्का करते हैं कि ये सभी बातचीत एक जैसी, कंस्ट्रक्टिव और एकेडमिक लक्ष्यों के साथ जुड़ी रहें।

**9. सूक्ष्म-स्तरीय शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाएँ**

रोज़ाना क्लासरूम में सीखने को आकार देने वाले कुछ छोटे-छोटे हिस्से:

- **सीखने के मकसद:** साफ़, मापने लायक, काबिलियत पर आधारित।
- **टीचिंग-लर्निंग मटीरियल (TLM):** विज़ुअल्स, मॉडल्स, डिजिटल टूल्स, मैनिपुलेटिव्स।
- **सिखाने के तरीके:** सीधे निर्देश, पूछताछ, चर्चा, प्रोजेक्ट, रोल-प्ले।
- **सीखने की एक्टिविटीज़:** हैंड्स-ऑन टास्क, प्रॉब्लम-सॉल्विंग, ब्रेनस्टॉर्मिंग, सिमुलेशन।
- **असेसमेंट के पल:** फॉर्मेटिव चेक, क्विज़, रिफ्लेक्शन।
- **फीडबैक लूप्स:** गलतियों को साफ़ करना, खूबियों को मज़बूत करना।
- **क्लोजर और कंसोलिडेशन:** समरी, एग्जिट टिकट, सोचने वाले सवाल।

स्कूल लीडर यह पक्का करते हैं कि सुपरविज़न और प्रोफेशनल सपोर्ट से इन छोटे-छोटे कामों को अच्छे से किया जाए।

**10. कक्षा का माहौल और सीखना**

क्लासरूम का माहौल सीखने पर बहुत ज़्यादा असर डालता है। अच्छे माहौल में ये शामिल हैं:

- भावनात्मक सुरक्षा
- सम्मान और विश्वास
- छात्र जुड़ाव
- भय का अभाव
- सहायक शिक्षक व्यवहार
- भागीदारी के अवसर
- प्रयास की मान्यता
- प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहन

नेगेटिव माहौल - जिसमें तानाशाही कंट्रोल, डर, मज़ाक या भेदभाव होता है - सीखने को दबा देता है।

प्रिंसिपल क्लासरूम के माहौल को इस तरह प्रभावित करते हैं:

- शिक्षक के व्यवहार के लिए अपेक्षाएँ निर्धारित करना
- सहानुभूति और सम्मान को बढ़ावा देना
- नियमित निगरानी और वॉकथ्रू
- समावेशी और भेदभाव-विरोधी प्रथाओं को सुनिश्चित करना

**11. एनईपी 2020 के संबंध में शिक्षण-अधिगम**

एनईपी 2020 में ज़ोर दिया गया है:

- **अनुभवात्मक शिक्षा**
- **योग्यता-आधारित शिक्षा**
- **बहुविषयक शिक्षा**
- **लचीले और व्यक्तिगत रास्ते**
- **कला, खेल और व्यावसायिक कौशल का एकीकरण**
- **आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता**
- **समावेशी शिक्षा**
- **मूल्यांकन सुधार**
- **शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास**

स्कूल लीडर्स को क्लासरूम के तरीकों को NEP 2020 के विज़न के साथ अलाइन करना होगा। टीचिंग-लर्निंग वह ज़रिया बन जाता है जिससे पॉलिसी प्रैक्टिस बन जाती है।

**12. एडमिनिस्ट्रेटिव रोल के लिए टीचिंग-लर्निंग को समझने का महत्व**

**A. प्रिंसिपल के लिए**

- एकेडमिक सुधार के लिए स्ट्रेटेजिक दिशा देता है
- शैक्षणिक समझ के आधार पर सुपरविज़न को सक्षम बनाता है
- सही थ्योरी को दिखाने वाली पॉलिसी डिज़ाइन करने में मदद करता है
- मेंटरिंग के ज़रिए टीचरों को मदद मिलती है
- अनुकूल लर्निंग सिस्टम बनाने में मदद करता है

**B. वाइस-प्रिंसिपल और एचएम के लिए**
- टीचिंग-लर्निंग प्लान को लागू करने में मदद करें
- टाइमटेबल, लेसन प्लानिंग, रिसोर्स एलोकेशन को कोऑर्डिनेट करें
- शैक्षणिक ऑडिट आयोजित करें
- कक्षा में सहायता और मार्गदर्शन प्रदान करें
- सीखने के लिए अनुकूल अनुशासन सुनिश्चित करें

**C. शिक्षकों के लिए**
- सिद्धांत को व्यवहार में बदलें
- लर्निंग थ्योरीज़ की समझ का इस्तेमाल करके लेसन प्लान डिज़ाइन करें
- विविध शिक्षार्थियों का प्रबंधन करें
- प्रभावी प्रतिक्रिया प्रदान करें
- आत्म-चिंतन में संलग्न हों

**D. शिक्षार्थियों के लिए**
- सेल्फ-अवेयरनेस और मेटाकॉग्निटिव स्किल्स डेवलप करें
- समझें कि वे कैसे सीखते हैं
- गहरी समझ के लिए स्ट्रेटेजी अपनाएं
- मिलकर और अनुभव से सीखने में शामिल हों

**13. लर्निंग थ्योरी और स्कूल लीडरशिप के बीच इंटरैक्शन**

स्कूल लीडर्स को ये सब करना आना चाहिए:
- **बिहेवियरिज़्म:** डिसिप्लिन फ्रेमवर्क, रीइन्फोर्समेंट सिस्टम, बिहेवियर मैनेजमेंट के लिए।
- **कॉग्निटिविज़्म:** स्ट्रक्चर्ड करिकुलम, कॉन्सेप्ट मैप, स्कैफोल्डिंग डिजाइन करने के लिए।
- **कंस्ट्रक्टिविज़्म:** प्रोजेक्ट-बेस्ड लर्निंग, इंक्वायरी टास्क, कोलेबोरेटिव लर्निंग के लिए।

लीडरशिप के फैसले सीधे तौर पर इन्हीं थ्योरेटिकल बेसिस से लिए जाते हैं।

**14. स्कूल सुधार के लिए एक आधार के रूप में शिक्षण-अधिगम**

स्कूल का सुधार इस पर निर्भर करता है:
- बेहतर शिक्षण पद्धतियाँ
- उच्च छात्र जुड़ाव
- बेहतर मूल्यांकन साक्षरता
- ड्रॉपआउट/सीखने के अंतराल में कमी
- शिक्षकों की बढ़ी हुई व्यावसायिकता
- सकारात्मक स्कूल संस्कृति
- डेटा-संचालित निर्णय

प्रिंसिपल यह पक्का करके कि टीचिंग-लर्निंग स्कूल के काम का फोकस बना रहे, पढ़ाई में बेहतरीन बनाने में कैटलिस्ट का काम करते हैं।

**15. KVS प्रिंसिपल एग्जाम के लिए इंटीग्रेटिव नजरिया**

KVS प्रिंसिपल एग्जाम में कॉन्सेप्चुअल, अप्लाइड और सिनेरियो-बेस्ड समझ की उम्मीद होती है। बेसिक टीचिंग-लर्निंग कॉन्सेप्ट्स एनालाइज़ करने का आधार देते हैं:
- सीखने में विफलता से जुड़े केस स्टडी
- शिक्षण विज्ञान में नेतृत्व संबंधी चुनौतियाँ
- कक्षा प्रबंधन की दुविधाएँ
- मूल्यांकन-उन्मुख निर्णय लेना
- शिक्षक विकास रणनीतियाँ
- नीति कार्यान्वयन के मुद्दे

इस तरह, ऑब्जेक्टिव और सब्जेक्टिव दोनों हिस्सों के लिए टीचिंग-लर्निंग की गहरी समझ ज़रूरी है।

## एक प्रणाली के रूप में शिक्षण-अधिगम

स्कूलों में पढ़ाना-सीखना, टीचर और सीखने वाले के बीच कोई आसान बातचीत नहीं है। यह एक **मुश्किल, आपस में जुड़ा हुआ, एडैप्टिव सिस्टम है** जो साइकोलॉजिकल, सोशल, इंस्टीट्यूशनल और एडमिनिस्ट्रेटिव पहलुओं से प्रभावित होता है। KVS लीडरशिप रोल की तैयारी कर रहे प्रिंसिपल, वाइस-प्रिंसिपल और HM के लिए, प्लानिंग, सुपरविज़न, इवैल्यूएशन, इनोवेशन और स्कूल ट्रांसफॉर्मेशन के लिए टीचिंग-लर्निंग को एक सिस्टम के तौर पर समझना ज़रूरी है।

यह चैप्टर एक गहरा कॉन्सेप्चुअल और ऑपरेशनल फ्रेमवर्क बनाता है ताकि स्कूल लीडर्स को टीचिंग-लर्निंग को पूरी तरह से देखने में मदद मिल सके - क्लासरूम-लेवल की बातचीत से आगे - स्कूल-वाइड इंस्ट्रक्शनल आर्किटेक्चर तक।

**1. एक सिस्टम के तौर पर टीचिंग-लर्निंग: कॉन्सेप्ट और मतलब**

एक सिस्टम एक जैसे मकसद को पाने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर चीज़ों का एक कलेक्शन होता है जो एक साथ काम करते हैं। स्कूल में, **टीचिंग-लर्निंग मुख्य इंस्ट्रक्शनल सिस्टम है** , जहाँ सभी सबसिस्टम - करिकुलम, टीचर, स्टूडेंट, रिसोर्स, लीडरशिप, माहौल, असेसमेंट - आपस में जुड़े होते हैं।

**एक सिस्टम के तौर पर टीचिंग-लर्निंग की खास बातें**

1. **आपसी निर्भरता:** अगर एक एलिमेंट बदलता है, तो यह दूसरे कॉम्पोनेंट्स पर असर डालता है।
2. **फीडबैक लूप्स:** स्टूडेंट की परफॉर्मेंस टीचिंग पर असर डालती है; लीडरशिप के फैसले क्लासरूम के तरीकों पर असर डालते हैं।
3. **लक्ष्य-उन्मुख:** पूरे सिस्टम का लक्ष्य सीखने के नतीजे, समग्र विकास और योग्यता हासिल करना है।
4. **ओपन सिस्टम:** माता-पिता, समुदाय, राष्ट्रीय नीतियों, CBSE, NCERT, NEP 2020 के साथ बातचीत करता है।
5. **डायनामिक:** टेक्नोलॉजी, समाज की मांगों और पॉलिसी में बदलाव के साथ लगातार बदलते रहना।
6. **अडैप्टिव:** सीखने वालों की ज़रूरतों, असेसमेंट, रिसोर्स के आधार पर एडजस्टमेंट की ज़रूरत होती है।

एक सिस्टेमैटिक नज़रिया लीडर्स को अलग-अलग फ़ैसलों से बचने में मदद करता है, जिससे पूरे स्कूल में तालमेल बना रहता है।

**2. टीचिंग-लर्निंग सिस्टम के घटक**

सिस्टम में ये ज़रूरी हिस्से शामिल हैं:

**A. इनपुट**

**1. शिक्षार्थी**

- पूर्व ज्ञान
- सीखने की शैलियाँ
- सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि
- प्रेरणा स्तर
- भाषा प्रवीणता
- स्पेशल नीड्स (CWSN)

ये तरीकों, स्पीड और असेसमेंट के चुनाव पर असर डालते हैं।

**2. शिक्षक**

- योग्यता, प्रशिक्षण, अनुभव
- शैक्षणिक विश्वास
- कक्षा प्रबंधन शैलियाँ
- आईसीटी साक्षरता
- मोटिवेशनल लेवल और प्रोफेशनल पहचान

टीचर की क्वालिटी, सीखने के नतीजों का सबसे मज़बूत फैक्टर है।

**3. पाठ्यक्रम**

- सीखने के परिणाम
- पाठ्यक्रम
- शैक्षणिक सिफारिशें
- पाठ्यपुस्तकें और डिजिटल संसाधन
- एनईपी 2020 अपेक्षाएँ (योग्यता-आधारित, अनुभवात्मक)

करिकुलम वह ढांचा देता है जिस पर सिखाने वाली एक्टिविटीज़ बनती हैं।

**4. संसाधन**

- फिजिकल रिसोर्स (क्लासरूम, लैब, लाइब्रेरी, ICT इंफ्रास्ट्रक्चर)
- मानव संसाधन (सपोर्ट स्टाफ, कोऑर्डिनेटर)
- डिजिटल रिसोर्स (स्मार्ट बोर्ड, ई-लाइब्रेरी, LMS प्लेटफॉर्म)

**5. स्कूल नेतृत्व**

लीडरशिप का नज़रिया टोन, दिशा, कल्चर और पूरे इंस्ट्रक्शनल माहौल को तय करता है।

**B. प्रक्रियाएं**

मुख्य इंस्ट्रक्शनल प्रोसेस में शामिल हैं:

**1. योजना**

- वार्षिक शैक्षणिक योजना
- पाठ योजना
- शिक्षण अवधि का आवंटन
- सामग्री अनुक्रमण
- टीएलएम तैयारी

लीडरशिप से प्लान में तालमेल पक्का होता है।

**2. शिक्षण रणनीतियाँ**
- प्रत्यक्ष निर्देश
- सहयोगी शिक्षण
- पूछताछ-आधारित शिक्षा
- परियोजना कार्य
- अनुभवात्मक शिक्षणशास्त्र
- आईसीटी-एकीकृत पाठ
- फ़्लिप्ड क्लासरूम मॉडल

**3. सीखने की गतिविधियाँ**
- व्यक्तिगत कार्य
- समूह चर्चा
- प्रयोगों
- नोट लेने
- बुद्धिशीलता
- चिंतनशील लेखन
- व्यावहारिक अभ्यास

**4. इंटरेक्शन पैटर्न**
- शिक्षक विद्यार्थी
- छात्र-छात्र
- शिक्षक-सामग्री
- छात्र-सामग्री
- स्कूल-समुदाय

सीखना इन इंटरैक्शन की क्वालिटी से चलता है।

**5. कक्षा प्रबंधन**
- मानदंड स्थापित करना
- व्यवस्था सुनिश्चित करना
- भागीदारी को सुविधाजनक बनाना
- संक्रमणों को विनियमित करना
- व्यवहार संबंधी समस्याओं से निपटना

**6. मूल्यांकन**
- रचनात्मक
- सारांश
- डायग्नोस्टिक
- प्रामाणिक आकलन (प्रोजेक्ट, पोर्टफोलियो)
- सीखने की प्रगति की निरंतर ट्रैकिंग

असेसमेंट से सुधार के लिए ज़रूरी फ़ीडबैक मिलता है।

**C. आउटपुट**
- सीखने के परिणाम
- कौशल विकास
- दृष्टिकोण निर्माण
- सामाजिक-भावनात्मक विकास
- मूल्य और नागरिकता गुण
- रचनात्मकता और समस्या-समाधान कौशल
- शारीरिक और सौंदर्य विकास

स्कूल लीडर्स को इन आउटपुट को रेगुलर तौर पर इवैल्यूएट करना चाहिए।

**3. स्कूल सिस्टम के एक सबसिस्टम के रूप में टीचिंग-लर्निंग सिस्टम**

स्कूलों में कई सब-सिस्टम होते हैं- एडमिनिस्ट्रेटिव, फाइनेंशियल, को-करिकुलर, ह्यूमन रिसोर्स, इंफ्रास्ट्रक्चर- लेकिन **टीचिंग-लर्निंग सबसे ऊपर का सब-सिस्टम है** , जो बाकी सभी को प्रभावित करता है और उनसे प्रभावित होता है।

**A. प्रशासनिक सबसिस्टम के साथ संबंध**

लीडरशिप पॉलिसी, नियम, टाइमटेबल, वर्कलोड का बंटवारा, और ड्यूटी असाइनमेंट पढ़ाने का समय और टीचर का फोकस तय करते हैं।

**B. सह-पाठ्यचर्या उपप्रणाली के साथ संबंध**
क्लब, इवेंट, स्पोर्ट्स, आर्ट्स और कॉम्पिटिशन जैसी एक्टिविटीज़ एक्सपीरिएंशियल और होलिस्टिक लर्निंग को बढ़ाती हैं।

**C. HR सबसिस्टम के साथ संबंध**
टीचर की भर्ती, इंडक्शन, अप्रेज़ल, ट्रेनिंग और मोटिवेशन सीधे तौर पर पढ़ाने की क्वालिटी पर असर डालते हैं।

**D. सामुदायिक उपतंत्र के साथ संबंध**
माता-पिता का शामिल होना, SMC मीटिंग, पुराने छात्रों का जुड़ाव और कम्युनिटी प्रोजेक्ट असल दुनिया में सीखने के लिए प्लैटफ़ॉर्म देते हैं।

**E. इंफ्रास्ट्रक्चर सबसिस्टम के साथ संबंध**
क्लासरूम डिज़ाइन, लैब, लाइब्रेरी, ICT सुविधाएं सीखने की प्रक्रिया पर काफ़ी असर डालती हैं।

**4. टीचिंग-लर्निंग सिस्टम को मैनेज करने में प्रिंसिपल की भूमिका**
प्रिंसिपल को सभी सबसिस्टम को एक साथ लाना होगा ताकि एक जैसा, असरदार और स्टूडेंट-सेंटर्ड टीचिंग-लर्निंग हो सके। ज़रूरी कामों में शामिल हैं:

**A. निर्देशात्मक नेतृत्व**
- अकादमिक विज़न और लक्ष्य तय करना
- कक्षा निर्देश की निगरानी
- शिक्षक के व्यावसायिक विकास में सहायता करना
- शैक्षणिक जवाबदेही बनाए रखना
- मूल्यांकन सुधारों का समन्वय

इंस्ट्रक्शनल लीडरशिप क्लासरूम में थ्योरी को प्रैक्टिस से जोड़ती है।

**B. शैक्षणिक योजना**
- वार्षिक पाठ्यक्रम मानचित्रण
- NEP 2020 के साथ शैक्षणिक प्रथाओं का संरेखण सुनिश्चित करना
- FLN (बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता) रणनीतियों को लागू करना
- संवर्धन और सुधारात्मक कार्यक्रमों का डिजाइन
- सह-शैक्षणिक एकीकरण की देखरेख

**C. सीखने की संस्कृति बनाना**
- जांच और प्रयोग को प्रोत्साहित करना
- शिक्षक नवाचार को मान्यता देना
- सहयोगात्मक माहौल बनाना
- PLC के ज़रिए टीचरों के बीच क्रॉस-लर्निंग को आसान बनाना
- चिंतनशील पत्रिकाओं को प्रोत्साहित करना

**D. संसाधन प्रबंधन**
- पर्याप्त टीएलएम आपूर्ति सुनिश्चित करना
- आईसीटी उपकरणों का अनुकूलन
- पुस्तकालय वृद्धि की योजना बनाना
- शिक्षा, ट्रेनिंग और एक्टिविटीज़ के लिए बजट का आवंटन

**E. हितधारक समन्वय**
- माता-पिता के साथ काम करना
- समुदाय और बाहरी एजेंसियों के साथ संपर्क स्थापित करना
- स्कूल के फैसलों में स्टूडेंट की आवाज़ सुनिश्चित करना

**F. निगरानी और मूल्यांकन**
- संरचित उपकरणों का उपयोग करके अवलोकन
- प्रायोगिक प्रदर्शन
- कक्षा पर्यवेक्षण
- छात्र उपलब्धि डेटा की समीक्षा
- शैक्षणिक ऑडिट आयोजित करना

सिस्टम की हेल्थ लगातार मॉनिटरिंग पर निर्भर करती है।

**5. टीचिंग-लर्निंग सिस्टम: VP और HM की लीडरशिप की ज़िम्मेदारियां**
वाइस-प्रिंसिपल और हेडमास्टर ऑपरेशनल इंस्ट्रक्शनल लीडर के तौर पर काम करते हैं। उनकी ज़िम्मेदारियों में शामिल हैं:

**A. समय सारिणी और शिक्षण समय**
- सीखने के घंटों का ज़्यादा से ज़्यादा इस्तेमाल पक्का करना
- विषय टकराव से बचना
- को-करिकुलर और रिमेडियल काम के लिए समय देना

**B. दैनिक निर्देशों का पर्यवेक्षण**
- पाठ योजनाओं की जाँच करना
- निगरानी कवरेज
- नए शिक्षकों का समर्थन
- सूक्ष्म-स्तरीय अवलोकन करना

**C. संसाधन समन्वय**
- टीएलएम की उपलब्धता सुनिश्चित करना
- आईसीटी के उपयोग का समर्थन
- लैब शेड्यूल प्रबंधित करना

**D. सहयोगात्मक प्रथाओं की सुविधा**
- विषय बैठकों का नेतृत्व करना
- शैक्षणिक अनुसंधान परियोजनाओं का संचालन
- कार्य अनुसंधान पहलों का समन्वय

**6. टीचिंग-लर्निंग सिस्टम और NEP 2020 अलाइनमेंट**
NEP 2020 टीचिंग-लर्निंग के कॉन्सेप्ट में एक सिस्टेमैटिक बदलाव को बढ़ावा देता है:

**A. कंटेंट से कॉम्पिटेंसी तक**
लर्निंग आउटकम एप्लीकेशन, एनालिसिस, क्रिएटिविटी और प्रॉब्लम सॉल्विंग पर फोकस करते हैं।

**B. रटने से लेकर अनुभव से सीखने तक**
स्कूलों को इन चीज़ों को जोड़ना होगा:
- परियोजनाओं
- कला-एकीकृत शिक्षा
- खेल-एकीकृत शिक्षा
- पूछताछ-आधारित शिक्षा
- व्यावहारिक प्रयोग

**C. स्टैंडर्डाइज़्ड असेसमेंट से होलिस्टिक असेसमेंट तक**
इस तरह के टूल्स का इस्तेमाल:
- रुब्रिक
- समकक्ष मूल्यांकन
- विभागों
- प्रदर्शन कार्य

**D. खंडित शिक्षण से बहुविषयक शिक्षण तक**
क्रॉस-डिसिप्लिनरी इंटीग्रेशन और थीमैटिक टीचिंग को बढ़ावा देना।

**E. समावेशी और न्यायसंगत शिक्षा**
CWSN के लिए सुविधाएँ, सामाजिक रूप से पिछड़े सीखने वालों के लिए कमियों को पूरा करना।
स्कूल लीडर्स को इन उम्मीदों के हिसाब से पढ़ाने के सिस्टम को फिर से डिज़ाइन करना होगा।

**7. टीचिंग-लर्निंग सिस्टम के अंदर फीडबैक मैकेनिज्म**
फीडबैक कई लेवल पर काम करता है:

**A. शिक्षार्थी-स्तरीय प्रतिक्रिया**
- शिक्षक प्रतिक्रिया
- श्रेष्ठ जन प्रतिपुष्टि
- आत्म मूल्यांकन
- रूब्रिक-आधारित मूल्यांकन

सुधार और मेटाकॉग्निशन में मदद करता है।

**B. शिक्षक-स्तरीय प्रतिक्रिया**
- कक्षा अवलोकन
- छात्र प्रदर्शन डेटा
- सहकर्मी समीक्षा
- मूल्यांकन प्रणालियाँ

पढ़ाने की काबिलियत में सुधार होता है।

**C. सिस्टम-स्तरीय फीडबैक**
- स्कूल के परिणाम
- बोर्ड परीक्षा विश्लेषण
- माता-पिता की प्रतिक्रिया
- बाहरी ऑडिट (जैसे, CBSE इंस्पेक्शन)

प्रिंसिपल्स द्वारा स्ट्रेटेजी को बेहतर बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है।

**8. टीचिंग-लर्निंग सिस्टम में रुकावटें**
रुकावटों को समझने से लीडर्स को असरदार फ़ैसले लेने में मदद मिलती है।

**A. शिक्षक-संबंधी बाधाएँ**
- प्रशिक्षण का अभाव
- नवाचार का प्रतिरोध
- विषय का खराब ज्ञान
- कम प्रेरणा
- अप्रभावी कक्षा प्रबंधन

**B. छात्र-संबंधी बाधाएँ**
- सीखने की अयोग्यता
- कम प्रेरणा
- भाषा संबंधी बाधाएं
- सामाजिक-आर्थिक चुनौतियाँ

**C. संसाधन-संबंधी बाधाएँ**
- सीमित आईसीटी सुविधाएं
- अपर्याप्त टीएलएम
- कक्षाओं का खराब रखरखाव

**D. प्रणालीगत बाधाएं**
- अतिभारित पाठ्यक्रम
- परीक्षा का दबाव
- बड़ी कक्षाएँ
- कठोर प्रशासनिक मानदंड

स्कूल लीडर्स को इन पर स्ट्रेटेजी बनाकर ध्यान देना चाहिए।

**9. टीचिंग-लर्निंग सिस्टम को मज़बूत करने की स्ट्रेटेजी**
प्रिंसिपल ये चीज़ें लागू कर सकते हैं:

**A. निर्देशात्मक कोचिंग और मेंटरिंग**
- नियमित प्रतिक्रिया
- प्रदर्शन पाठ
- सह-शिक्षण मॉडल
- पाठ अध्ययन समूह

**B. व्यावसायिक विकास**
- पेडागॉजी, ICT, असेसमेंट पर वर्कशॉप
- क्रिया अनुसंधान प्रशिक्षण
- सहकर्मी शिक्षण मंडल

**C. डेटा-आधारित निर्णय लेना**
- कमियों की पहचान के लिए असेसमेंट डेटा का इस्तेमाल करना
- उपचारात्मक शिक्षण की योजना बनाना
- डैशबोर्ड के ज़रिए प्रोग्रेस ट्रैक करना

Toppersnotes
Unleash the topper in you

**D. सीखने के माहौल को बेहतर बनाना**
- लचीली सीटिंग
- सीखने के कोने
- आईसीटी स्टेशन
- सीखने की प्रक्रियाओं को दिखाने वाले डिस्प्ले

**E. अभिभावक-विद्यालय साझेदारी**
- पेरेंटिंग कार्यशालाएँ
- शैक्षणिक परामर्श
- होमवर्क सहायता योजनाएँ

**F. प्रौद्योगिकी एकीकरण**
- एलएमएस सिस्टम
- हाइब्रिड लर्निंग
- सुधार और बेहतर बनाने के लिए डिजिटल कंटेंट का इस्तेमाल

**10. लीडर्स के लिए सिस्टमिक नज़रिया: पूरी समझ**

एक प्रिंसिपल के लिए, टीचिंग-लर्निंग को एक सिस्टम के तौर पर समझने का मतलब है:
- स्कूल को आपस में जुड़े रिश्तों के जाल के रूप में देखना
- सीखने के लक्ष्यों के लिए सभी संसाधनों को एक साथ लाना
- पॉलिसी, प्लानिंग और क्लासरूम प्रैक्टिस के बीच तालमेल बनाना
- सभी स्टूडेंट्स के लिए लर्निंग एक्सीलेंस पक्का करना, सिर्फ़ अचीवर्स के लिए नहीं
- निर्देशात्मक प्रक्रियाओं का लगातार मूल्यांकन और सुधार करना
- विज़न, सहानुभूति और डेटा-बेस्ड फ़ैसलों के साथ आगे बढ़ना

एक रूटीन स्कूल को एक अच्छी लर्निंग कम्युनिटी में बदलने के लिए एक सिस्टेमैटिक नज़रिया ज़रूरी है।

## व्यवहारवाद - मूल अवधारणाएँ

**1. परिचय: लर्निंग थ्योरी में बिहेवियरिज़्म की स्थिति**

बिहेवियरिज़्म एजुकेशनल साइकोलॉजी के इतिहास में सीखने के सबसे असरदार नज़रियों में से एक है। 20वीं सदी की शुरुआत में सामने आया यह तरीका सीखने की मेंटलिस्टिक व्याख्याओं से अलग था - इसके बजाय यह **देखने लायक व्यवहार** , **आस-पास की उत्तेजनाओं** और **कंडीशनिंग प्रोसेस पर ध्यान देता था** ।

स्कूल लीडर्स के लिए, बिहेवियरिज़्म इन चीज़ों के बारे में बुनियादी जानकारी देता है:
- छात्र आदतें कैसे सीखते हैं
- अनुशासन प्रणालियाँ कैसे काम करती हैं
- रीइन्फोर्समेंट कैसे क्लासरूम के व्यवहार को आकार देता है
- सीखने के नतीजे कैसे डिज़ाइन किए जाते हैं जिन्हें पहले से पता हो और जिन्हें मापा जा सके
- टीचर द्वारा दिए गए निर्देश सीखने को कैसे बनाते हैं

भले ही मॉडर्न एजुकेशन में कंस्ट्रक्टिविस्ट और कॉग्निटिव आइडिया शामिल हैं, फिर भी बिहेवियरिस्ट प्रिंसिपल अभी भी क्लासरूम मैनेजमेंट, मोटिवेशन, स्किल एक्विजिशन, ड्रिल-बेस्ड लर्निंग और स्ट्रक्चर्ड इंस्ट्रक्शनल प्रैक्टिस में ज़रूरी रोल निभाते हैं।

**2. बिहेवियरिज़्म के फिलोसोफिकल और साइंटिफिक आधार**

बिहेवियरिज़्म की शुरुआत आत्मनिरीक्षण और सब्जेक्टिव उपायों के खिलाफ एक रिएक्शन के तौर पर हुई। इसकी नींव इन पर टिकी है:

**A. अनुभववाद**

ज्ञान अनुभव और माहौल के साथ सेंसरी इंटरैक्शन से मिलता है।

**B. वस्तुवाद**

सिर्फ़ देखा जा सकने वाला व्यवहार - विचार या भावनाएँ नहीं - साइंटिफिक माना जाता है।

**C. सीखने का यंत्रवत दृष्टिकोण**

इंसानों को आस-पास की चीज़ों पर रिस्पॉन्ड करने वाले के तौर पर देखा जाता है।
व्यवहार = f (स्टिमुलस, रीइन्फोर्समेंट, कॉन्सिक्वेंस)

**D. नियतिवाद**

व्यवहार पहले से तय नियमों को मानता है; सीखना तब होता है जब स्टिमुलस और रिस्पॉन्स बार-बार जुड़े होते हैं।

**E. प्रत्यक्षवाद**

साइकोलॉजी को ऐसी घटनाओं पर निर्भर रहना चाहिए जिन्हें मापा जा सके और जिनका हिसाब लगाया जा सके।
इन सिद्धांतों ने सीखने की पढ़ाई के लिए एक सख्त, साइंटिफिक तरीका बनाया - जो स्कूलों जैसी स्ट्रक्चर्ड एजुकेशनल सेटिंग्स के लिए आइडियल है।

**3. मुख्य बिहेवियरिस्ट थ्योरीस्ट और योगदान**

बिहेवियरिज़्म बड़े साइकोलॉजिस्ट के योगदान से विकसित हुआ। KVS लीडर्स के लिए, डिसिप्लिन सिस्टम, रीइन्फोर्समेंट स्ट्रेटेजी और स्ट्रक्चर्ड टीचिंग अप्रोच की जड़ों को समझने के लिए इन थ्योरिस्ट की जानकारी ज़रूरी है।

**A. जॉन B. वॉटसन - फाउंडेशनल बिहेवियरिज्म**

वॉटसन ने कहा कि साइकोलॉजी को सिर्फ़ देखे जा सकने वाले व्यवहार की स्टडी करनी चाहिए।
सीखना इन तरीकों से होता है:

- आदत निर्माण
- उत्तेजना-प्रतिक्रिया संबंध
- पर्यावरण कंडीशनिंग

मुख्य विचार: "मुझे एक दर्जन स्वस्थ बच्चे दो... मैं उनमें से किसी को भी अपनी पसंद का कुछ भी बनने के लिए ट्रेन कर सकता हूँ।"
→ जन्मजात गुणों के बजाय माहौल को आकार देने पर ज़ोर देना।

**B. इवान पावलोव - क्लासिकल कंडीशनिंग**

**स्टिमुलस के जुड़ाव** से सीखना हो सकता है ।

**महत्वपूर्ण अवधारणाएं**

- बिना शर्त उत्तेजना (UCS): भोजन
- बिना शर्त प्रतिक्रिया (UCR): लार आना
- तटस्थ उत्तेजना (NS): घंटी
- कंडीशन्ड स्टिमुलस (CS): एसोसिएशन के बाद घंटी
- कंडीशन्ड रिस्पॉन्स (CR): घंटी बजने पर लार टपकना

**शैक्षिक प्रासंगिकता**

- इमोशनल लर्निंग (डर, पसंद, चिंता)
- क्लासरूम रूटीन (घंटी = शांति, अभिवादन = ध्यान)
- आदत निर्माण
- सीखने के साथ सकारात्मक भावनात्मक माहौल का जुड़ाव

पावलोव ने स्कूल में स्टूडेंट्स में बनने वाले **ऑटोमैटिक बिहेवियरल पैटर्न के बारे में बताया।**

**C. एडवर्ड एल. थोर्नडाइक - कनेक्शनिज्म और सीखने के नियम**

**ट्रायल-एंड-एरर लर्निंग** का आधार बनाया ।

**सीखने के तीन नियम**

1. **तैयारी का नियम**
   सीखना तब होता है जब सीखने वाला तैयार होता है (मानसिक, भावनात्मक, शारीरिक रूप से)।
   → उम्र के हिसाब से करिकुलम की प्लानिंग के लिए ज़रूरी।
2. **एक्सरसाइज का नियम**
   प्रैक्टिस से कनेक्शन मजबूत होते हैं; प्रैक्टिस की कमी से वे कमजोर होते हैं।
   → ड्रिल, रिपीटिशन, होमवर्क, लैब प्रैक्टिस के लिए फाउंडेशन।
3. **लॉ ऑफ़ इफ़ेक्ट**
   जिन व्यवहारों के बाद संतुष्टि आती है, वे मज़बूत होते हैं; जिनके बाद बेचैनी आती है, वे कमज़ोर होते हैं।
   → रिवॉर्ड सिस्टम और पॉज़िटिव डिसिप्लिन के पीछे का मुख्य विचार।

**ट्रांसफर ऑफ़ लर्निंग** भी डेवलप किया , जो NEP 2020 के कॉम्पिटेंसी फ्रेमवर्क का सेंट्रल मैंडेट बना हुआ है।

**DBF स्किनर - ऑपरेंट कंडीशनिंग**

स्किनर ने बिहेवियरिज़्म को एसोसिएशन से **कॉन्सिक्वेंस-ड्रिवन लर्निंग तक बढ़ाया** ।
बिहेवियर रीइन्फोर्समेंट से बनता है और अनचाहे नतीजों से सज़ा मिलती है।

**महत्वपूर्ण अवधारणाएँ**

- **मजबूती:** व्यवहार को बढ़ाता है
  - सकारात्मक सुदृढ़ीकरण (पुरस्कार)
  - नेगेटिव रीइन्फोर्समेंट (अप्रिय स्थिति को हटाना)
- **सज़ा:** व्यवहार में कमी लाती है
- **विलुप्ति:** जब रीइन्फोर्समेंट बंद हो जाता है तो व्यवहार का गायब होना
- **रीइन्फोर्समेंट के शेड्यूल:** फिक्स्ड, वेरिएबल, कंटीन्यूअस, इंटरमिटेंट

**क्रमादेशित निर्देश**

स्किनर ने इन चीज़ों का इस्तेमाल करके टीचिंग मशीनें बनाईं:

- छोटे कदम
- सक्रिय प्रतिक्रिया
- तत्काल प्रतिक्रिया
- आत्म पेसिंग
- सुदृढीकरण

बाद में इसका असर इन पर पड़ा:

- कंप्यूटर आधारित शिक्षा
- अनुकूली शिक्षण प्रौद्योगिकियाँ
- उपचारात्मक निर्देश कार्यक्रम

स्किनर की थ्योरी क्लासरूम डिसिप्लिन, मोटिवेशन सिस्टम, लेसन सीक्वेंसिंग और बिहेवियर मैनेजमेंट प्लान में बहुत ज़्यादा इस्तेमाल होती है।

**4. बिहेवियरिस्ट लर्निंग के मुख्य सिद्धांत**

बिहेवियरिज़्म की गहरी स्ट्रक्चरल समझ के लिए इसके अंदरूनी सिद्धांतों में महारत हासिल करना ज़रूरी है।

**A. सीखना = व्यवहार परिवर्तन**

बिहेवियरिज़्म सीखने को इस तरह से परिभाषित करता है:

- एक मापनीय परिवर्तन
- अवलोकनीय क्रियाओं में
- अनुभव के कारण होने वाला
- आंतरिक मानसिक प्रक्रियाओं से स्वतंत्र

मेज़रेबल सबूत पर यह फ़ोकस स्कूल इवैल्यूएशन सिस्टम से मेल खाता है।

**B. उत्तेजना-प्रतिक्रिया (एसआर) बांड**

सीखना SR कनेक्शन को मजबूत करने से होता है।

उदाहरण:

- घंटी सुनना (स्टिमुलस) → चुपचाप खड़े होना (रिस्पॉन्स)
- टीचर की तारीफ़ (स्टिमुलस) → ज़्यादा पार्टिसिपेशन (रिस्पॉन्स)

ये बॉन्ड रोज़ाना की स्कूलिंग प्रोसेस को गाइड करते हैं।

**C. सुदृढीकरण सीखने को प्रेरित करता है**

मज़बूती सबसे ज़रूरी चीज़ है।

**सकारात्मक सुदृढीकरण के उदाहरण**

- प्रशंसा
- ग्रेड
- हाउस पॉइंट्स
- प्रमाण पत्र
- विशेषाधिकार

**नेगेटिव रीइन्फोर्समेंट के उदाहरण**

- अतिरिक्त कार्य हटाना
- अनचाही ड्यूटी रद्द करना

मज़बूती समय पर, एक जैसी और मतलब वाली होनी चाहिए।

**D. अभ्यास ज़रूरी है**

बिहेवियरिस्ट प्रैक्टिस को सीखने की रीढ़ की हड्डी मानते हैं:

- दुहराव
- छेद करना
- रटना
- योग्यता-आधारित महारत अभ्यास
- प्रवाह निर्माण कार्य

थोर्नडाइक का एक्सरसाइज़ का नियम प्राइमरी क्लास, भाषा सीखने और गणित में बड़े पैमाने पर लागू होता है।

**E. पर्यावरण व्यवहार को आकार देता है**

व्यवहार = f(पर्यावरण)

इसका मतलब है:

- कक्षा का वातावरण
- शिक्षक अपेक्षाएँ
- स्कूल के नियम
- सहकर्मी मानदंड

ये सभी स्टूडेंट के व्यवहार को आकार देते हैं।

**एनवायरनमेंटल आर्किटेक्ट** की भूमिका निभाते हैं ।

**F. सीखना धीरे-धीरे होता है, समझदारी भरा नहीं**

बिहेवियरिस्ट का कहना है कि सीखना छोटे, मापने लायक स्टेप्स में होता है - अचानक छलांग नहीं।

इसलिए, इंस्ट्रक्शन को सीक्वेंस, स्कैफोल्ड और स्ट्रक्चर्ड होना चाहिए।

**5. इंसानी मोटिवेशन के संबंध में बिहेवियरिज़्म**

बिहेवियरिज़्म मोटिवेशन को इस तरह समझाता है:

- पुरस्कारों के प्रति प्रतिक्रिया
- सजा से बचना
- बाहरी प्रोत्साहन की इच्छा
- मानदंडों का अनुपालन
- आदत निर्माण

हालांकि मॉडर्न थ्योरीज़ इंट्रिंसिक मोटिवेशन को प्रायोरिटी देती हैं, लेकिन बिहेवियरिज़्म अभी भी ज़रूरी है:

- प्रारंभिक बचपन की शिक्षा
- कक्षा की दिनचर्या
- कौशल में महारत
- आदत बनाना
- अनुशासन प्रणालियाँ
- कम प्रेरणा वाले शिक्षार्थी

स्कूल लीडरशिप को सेल्फ-रेगुलेटेड लर्नर्स बनाने के लिए बाहरी इंसेंटिव और अंदरूनी मोटिवेशन में बैलेंस बनाना होगा।

**6. टीचिंग में बिहेवियरिज़्म का इस्तेमाल**

बिहेवियरिज़्म सिखाने के तरीकों पर असर डालता है, जैसे:

**A. संरचित, शिक्षक-केंद्रित निर्देश**

- स्पष्ट उद्देश्य
- चरण-दर-चरण शिक्षण
- प्रत्यक्ष स्पष्टीकरण
- निर्देशित अभ्यास
- बार-बार प्रतिक्रिया
- महारत जाँच

**B. ड्रिल और अभ्यास**

इसके लिए उपयोगी:

- टेबल
- वर्तनी
- व्याकरण के नियम
- वैज्ञानिक नियम
- गणितीय एल्गोरिदम
- भाषा संरचनाएँ

**C. सुदृढीकरण-आधारित रणनीतियाँ**

- टोकन सिस्टम
- प्रशंसा पत्र
- पुरस्कार चार्ट
- व्यवहार अनुबंध

**D. तत्काल प्रतिक्रिया**

इसके लिए महत्वपूर्ण:

- कौशल प्रशिक्षण
- उपचारात्मक निर्देश
- कंप्यूटर आधारित शिक्षा

**E. व्यवहार संशोधन तकनीकें**

- आकार देना (क्रमिक सुधार)
- चेनिंग (टास्क को स्टेप्स में तोड़ना)
- मॉडलिंग (अवलोकन अभ्यास)
- विलुप्तीकरण (सुदृढीकरण हटाना)

इन्हें खास तौर पर इनक्लूसिव एजुकेशन और मुश्किल क्लासरूम में लागू किया जाता है।

**7. क्लासरूम मैनेजमेंट सिस्टम में बिहेवियरिज़्म**

बिहेवियरिज़्म इसके लिए आधार देता है:

**A. नियम और दिनचर्या**

साफ़ और साफ़ उम्मीदें कन्फ्यूजन को कम करती हैं।

**B. सकारात्मक अनुशासन**

इनाम मनचाहे व्यवहार को मज़बूत करते हैं।

**C. परिणाम प्रबंधन**

पहले से पता नतीजे व्यवस्था बनाए रखते हैं।

**D. निगरानी और पर्यवेक्षण**

टीचर व्यवहार के पैटर्न देखते हैं और उसी हिसाब से मदद को एडजस्ट करते हैं।

**E. व्यवहार डेटा ट्रैकिंग**

आदतें मज़बूत करने के लिए अटेंडेंस, पंक्चुएलिटी, काम पूरा करना, होमवर्क जमा करना ट्रैक किया जाता है।

**8. व्यवहारवाद की आलोचनाएँ**

बिहेवियरिज़्म, अपने असर के बावजूद, इसकी कुछ सीमाएँ हैं:

**A. अवलोकनीय व्यवहार पर अत्यधिक जोर**

सोच, क्रिएटिविटी, प्रॉब्लम सॉल्विंग को नज़रअंदाज़ करता है।

**B. रटने को प्रोत्साहित करता है**

ड्रिल प्रैक्टिस गहरी समझ पर हावी हो सकती है।

**C. शिक्षक का अत्यधिक नियंत्रण**

तानाशाही माहौल का खतरा।

**D. उच्च-क्रम सीखने के लिए सीमित प्रयोज्यता**

एनालिसिस, सिंथेसिस, क्रिटिकल थिंकिंग के लिए कॉग्निटिव और कंस्ट्रक्टिविस्ट अप्रोच की ज़रूरत होती है।

**E. बाह्य प्रेरणा प्रभुत्व**

लंबे समय तक चलने वाले मोटिवेशन के लिए अंदरूनी जुड़ाव की ज़रूरत होती है।
स्कूल लीडर्स को बिहेवियरिज़्म को कॉग्निटिव और कंस्ट्रक्टिविस्ट नज़रिए से सप्लीमेंट करना चाहिए।

**9. आज स्कूल लीडरशिप में बिहेवियरिज़्म की क्या ज़रूरत है**

सीमाओं के बावजूद, बिहेवियरिज़्म इन चीज़ों के लिए ज़रूरी है:

**A. विद्यालय संस्कृति का निर्माण**

मज़बूती उम्मीदों और रूटीन को आकार देती है।

**B. अनुशासन रूपरेखा तैयार करना**

नियम, नतीजे, इनाम और मॉनिटरिंग व्यवहार के सिद्धांतों पर निर्भर करते हैं।

**C. संरचित शिक्षण**

स्टेप-वाइज इंस्ट्रक्शन के फायदे:

- उपचारात्मक शिक्षार्थी
- प्राथमिक छात्रों
- बाधाओं वाले छात्र

**D. शिक्षक मूल्यांकन**
देखने लायक टीचिंग बिहेवियर, बिहेवियरिस्ट प्रिंसिपल्स के साथ अलाइन होते हैं।

**E. डेटा-आधारित व्यवहार प्रबंधन**
अटेंडेंस ट्रैकिंग, बिहेवियर लॉग बिहेवियरिस्ट असेसमेंट दिखाते हैं।

**F. पूर्वानुमानित शिक्षण पैटर्न सुनिश्चित करना**
बिहेवियरिज़्म क्लासरूम में एक जैसा व्यवहार बनाने में मदद करता है।

**10. NEP 2020 की मांगों के साथ एकीकरण**
NEP 2020 बिहेवियरिज़्म को खारिज नहीं करता है। इसके बजाय, यह इसे शामिल करता है और मॉडरेट करता है।

**प्रमुख एकीकरण**
- दोहराव के माध्यम से कौशल में महारत हासिल करना
- आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता अभ्यास
- जिज्ञासा के लिए सकारात्मक सुदृढीकरण
- सामाजिक-भावनात्मक सीखने के लिए आदत निर्माण
- शुरुआती ग्रेड के लिए स्ट्रक्चर्ड पेडागॉजी

बिहेवियरिज़्म NEP की शुरुआती स्टेज की मांगों का समर्थन करता है।

## व्यवहारवाद - स्कूल लीडरशिप के लिए निहितार्थ (प्रिंसिपल, वाइस-प्रिंसिपल, HM)

एजुकेशनल लीडरशिप के लिए बिहेवियरिज़्म के बहुत बड़े और कई तरह के असर होते हैं। एक स्कूल लीडर - प्रिंसिपल, वाइस-प्रिंसिपल (VP), या हेडमास्टर (HM) के लिए, डिसिप्लिन सिस्टम को गाइड करने, अनुमानित बिहेवियरल नॉर्म्स बनाने, स्ट्रक्चर्ड इंस्ट्रक्शनल फ्रेमवर्क डिज़ाइन करने, टीचर परफॉर्मेंस को मैनेज करने और स्कूल कल्चर को आकार देने के लिए बिहेवियरिस्ट प्रिंसिपल्स को समझना ज़रूरी है।

यह चैप्टर **बिहेवियरिज़्म का लीडरशिप-सेंट्रिक इंटरप्रिटेशन देता है** , जो साइकोलॉजिकल प्रिंसिपल्स को स्ट्रेटेजिक एडमिनिस्ट्रेटिव, सुपरवाइज़री और ऑर्गेनाइज़ेशनल एक्शन में बदलता है।

**1. स्कूल लीडरशिप के लिए बिहेवियरिज़्म क्यों ज़रूरी है**
बिहेवियरिज़्म एजुकेशनल लीडर्स के लिए इसलिए ज़रूरी है क्योंकि:
- स्कूल एक स्ट्रक्चर्ड माहौल में काम करते हैं जहाँ प्रेडिक्टेबल बिहेवियर होना चाहिए।
- ज़्यादा स्टूडेंट आबादी के लिए एक जैसे नियम ज़रूरी हैं।
- अनुशासन, रूटीन बनाना, आदत बनाना, और मोटिवेशनल सिस्टम बिहेवियरिस्ट विचारों से लिए गए हैं।
- स्कूल की सफलता के इंडिकेटर - अटेंडेंस, समय की पाबंदी, काम पूरा करना - ये सभी व्यवहार के माप हैं।
- टीचर का मूल्यांकन अक्सर देखने लायक टीचिंग बिहेवियर पर फोकस करता है।
- सुरक्षा, व्यवस्था और गुणवत्ता मापे जा सकने वाले व्यवहारिक नतीजों पर निर्भर करती है।

इस तरह, बिहेवियरिस्ट फ्रेमवर्क लीडरशिप को स्कूल के काम करने के तरीके पर असर डालने के लिए **एक प्रैक्टिकल, मेज़रेबल, कंट्रोल किया जा सकने वाला नज़रिया देता है।**

**2. स्कूल के व्यवहारिक माहौल के आर्किटेक्ट के रूप में प्रिंसिपल**
बिहेवियरिज़्म इस बात पर ज़ोर देता है कि बाहरी माहौल का स्टूडेंट और टीचर के व्यवहार पर बहुत ज़्यादा असर होता है। इसलिए प्रिंसिपल इस तरह काम करते हैं:
- **व्यवहार प्रणालियों के डिज़ाइनर**
- **सुदृढ़ीकरण संरचनाओं के निर्माता**
- **व्यवहार पैटर्न के मॉनिटर**
- **कार्यों के परिणामों के नियामक**
- **कक्षा के माहौल को प्रभावित करने वाले स्टिमुलस के मैनेजर**

स्कूल के एनवायरनमेंटल आर्किटेक्चर में शामिल हैं:
- समय सारिणी
- सभाओं
- कक्षा लेआउट
- निगरानी प्रणालियाँ
- पर्यवेक्षण पैटर्न
- पुरस्कार तंत्र
- अनुशासनात्मक प्रक्रियाएं
- संचार चैनल

ये सभी "व्यवहार-निर्माण उत्तेजनाओं" के रूप में काम करते हैं।

**3. लीडरशिप में बिहेवियरिज़्म: कानून और कंडीशनिंग प्रिंसिपल्स को लागू करना**

**A. थॉर्नडाइक का तैयारी का नियम - लीडरशिप के मायने**

स्कूल लीडर यह पक्का करते हैं:

- आयु-उपयुक्त पाठ्यक्रम प्लेसमेंट
- तैयारी के लिए पर्याप्त संसाधन (लैब, ICT, TLM)
- शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण समय
- काउंसलिंग सिस्टम के ज़रिए इमोशनल तैयारी  परामर्श प्रणाली के ज़रिए भावनात्मक ...
- रूटीन बदलाव जो सीखने से पहले स्टूडेंट्स को तैयार करते हैं

एक प्रिंसिपल स्कूल के काम-काज की प्लानिंग इस तरह करता है कि **फिजिकल, इमोशनल और कॉग्निटिव तैयारी** ज़्यादा से ज़्यादा हो।

**B. थॉर्नडाइक का एक्सरसाइज का नियम - लीडरशिप के मतलब**

लीडरशिप इस कानून का इस्तेमाल करती है:

- प्रैक्टिस पीरियड को संस्थागत बनाएं (जैसे, पढ़ने का पीरियड, मैथ प्रैक्टिस का घंटा)
- रोज़ाना के काम (हाज़िरी, चुपचाप पढ़ना, सुबह का काम) पक्का करें।
- डायरी चेक करने, होमवर्क पूरा करने जैसी अच्छी आदतें डालें
- कौशलों के बार-बार संपर्क का परिचय दें
- संरचना संशोधन कार्यक्रम

लीडरशिप **प्रैक्टिस वाला टाइमटेबल डिज़ाइन करती है** क्योंकि बार-बार जुड़ने से सीखने की क्षमता बढ़ती है।

**C. थॉर्नडाइक का प्रभाव का नियम - लीडरशिप के निहितार्थ**

स्कूल लीडर इन तरीकों से लॉ ऑफ़ इफ़ेक्ट लागू करते हैं:

- अटेंडेंस, बिहेवियर, परफॉर्मेंस के लिए रिवॉर्ड सिस्टम
- प्रशंसा पत्रों के माध्यम से शिक्षकों का सम्मान
- हाउस पॉइंट्स, बैज, सर्टिफिकेट
- सभाओं के दौरान सार्वजनिक प्रशंसा
- सुधार को स्वीकार करते हुए माता-पिता का संचार

लॉ ऑफ़ इफ़ेक्ट **पॉज़िटिव रीइन्फोर्समेंट का कल्चर बनाता है** , जिससे सज़ा देने वाले सिस्टम की ज़रूरत कम हो जाती है।

**D. पावलोव की क्लासिकल कंडीशनिंग - लीडरशिप के मायने**

प्रिंसिपल इमोशनल एसोसिएशन बनाते हैं:

- स्कूल की घंटी = शांति और बदलाव
- सुबह की असेंबली का संगीत = शांति, मिलकर काम करने का माहौल
- स्वागत के इशारे = सीखने के लिए मनोवैज्ञानिक तैयारी
- साफ़ यूनिफ़ॉर्म चेक = अनुशासन के साथ जुड़ाव
- क्लासरूम रूटीन = ऑटोमैटिक बिहेवियर पैटर्न

स्कूल का दिन कंडीशन्ड रिस्पॉन्स का एक सीक्वेंस बन जाता है जो ऑर्डर बनाए रखता है और अफ़रा-तफ़री को कम करता है।

**E. स्किनर की ऑपरेंट कंडीशनिंग - लीडरशिप के निहितार्थ**

ऑपरेटर सिद्धांत गाइड:

- पुरस्कार-आधारित अनुशासन
- हिरासत, खास अधिकार का नुकसान (सावधानी से इस्तेमाल किया गया)
- टोकन अर्थव्यवस्था प्रणालियाँ
- होमवर्क, समय की पाबंदी, व्यवहार के लिए मज़बूती
- डिजिटल प्लेटफॉर्म में ऑटोमेटेड रीइन्फोर्समेंट

**लीडरशिप को यह पक्का करना चाहिए कि मज़बूती मिले:**

- तुरंत
- सुसंगत
- सदृश
- सार्थक
- आयु-उपयुक्त

रैंडम रीइन्फोर्समेंट से बिहेवियरल कन्फ्यूजन होता है।

**4. बिहेवियरिज़्म और डिसिप्लिन सिस्टम में प्रिंसिपल की भूमिका**

अनुशासन एक सेंट्रल लीडरशिप फंक्शन है। बिहेवियरिज़्म इसके लिए फिलोसोफिकल और प्रैक्टिकल आधार देता है:

- निवारक अनुशासन
- सकारात्मक अनुशासन
- सुधारात्मक अनुशासन
- व्यवहार संशोधन प्रणालियाँ

**A. स्पष्ट व्यवहार अपेक्षाएँ बनाना**

प्रिंसिपल की टीम को ये बातें बतानी और बतानी होंगी:

- स्कूल-व्यापी व्यवहार नियम
- गलियारे का व्यवहार
- कक्षा का आचरण
- विधानसभा मानदंड
- प्रयोगशाला सुरक्षा नियम
- आईसीटी उपयोग मानदंड
- बस व्यवहार अपेक्षाएँ

साफ़ उम्मीदें कन्फ्यूजन को कम करती हैं और कम्प्लायंस को बढ़ाती हैं।

**B. सुदृढ़ीकरण प्रणालियाँ स्थापित करना**

लीडरशिप डिज़ाइन:

- छात्र प्रोत्साहन
- शिक्षक सुदृढ़ीकरण तंत्र
- कक्षा प्रदर्शन पुरस्कार
- अंतर-हाउस प्रतियोगिताएं
- मॉडल कक्षा पुरस्कार
- मासिक व्यवहार संबंधी पहचान

ये सिस्टम लंबे समय तक चलने वाली अच्छी आदतें बनाते हैं।

**C. टियर्ड बिहेवियर सपोर्ट सिस्टम (मल्टी-लेवल)**

1. **प्राइमरी लेवल:** स्कूल-वाइड उम्मीदें
2. **सेकेंडरी लेवल:** रिस्क वाले स्टूडेंट्स के लिए टारगेटेड सपोर्ट
3. **टर्शियरी लेवल:** पुरानी बिहेवियरल दिक्कतों के लिए इंडिविजुअलाइज़्ड इंटरवेंशन

यह बिहेवियरिज़्म के सिस्टमैटिक शेपिंग पर फोकस से मेल खाता है।

**5. टीचर सुपरविज़न और इवैल्यूएशन में बिहेवियरिज़्म**

स्कूल लीडर **दिखने वाले टीचिंग बिहेवियर पर नज़र रखते हैं** , जैसे:

- निर्देशों की स्पष्टता
- कक्षा संगठन
- प्रशंसा और प्रतिक्रिया का उपयोग
- कार्य पर समय
- आँखों का संपर्क बनाए रखना
- बदलावों को सुचारू रूप से प्रबंधित करना
- विघटनकारी व्यवहार से निपटना

बिहेवियरिज़्म के तहत टीचर अप्रेज़ल इन पर फ़ोकस करता है:

- साक्ष्य-आधारित प्रदर्शन
- अवलोकनीय अनुदेशात्मक व्यवहार
- इस्तेमाल की गई सुदृढ़ीकरण रणनीतियाँ
- व्यावसायिक विकास में भागीदारी
- स्कूल के व्यवहार के माहौल में योगदान

बिहेवियरिज़्म सुपरविज़न सिस्टम के लिए एक ऑब्जेक्टिव बेस देता है।

**6. स्कूल कल्चर बनाने में बिहेवियरिज़्म**

कल्चर बार-बार किए गए, मज़बूत किए गए व्यवहारों से बनता है।

इसलिए, प्रिंसिपल्स इन चीज़ों को मज़बूत करके कल्चर को आकार देते हैं:

- समय की पाबंदी
- आदर
- स्वच्छता
- ज़िम्मेदारी
- सहयोग
- उपलब्धि अभिविन्यास

Toppersnotes
Unleash the topper in you